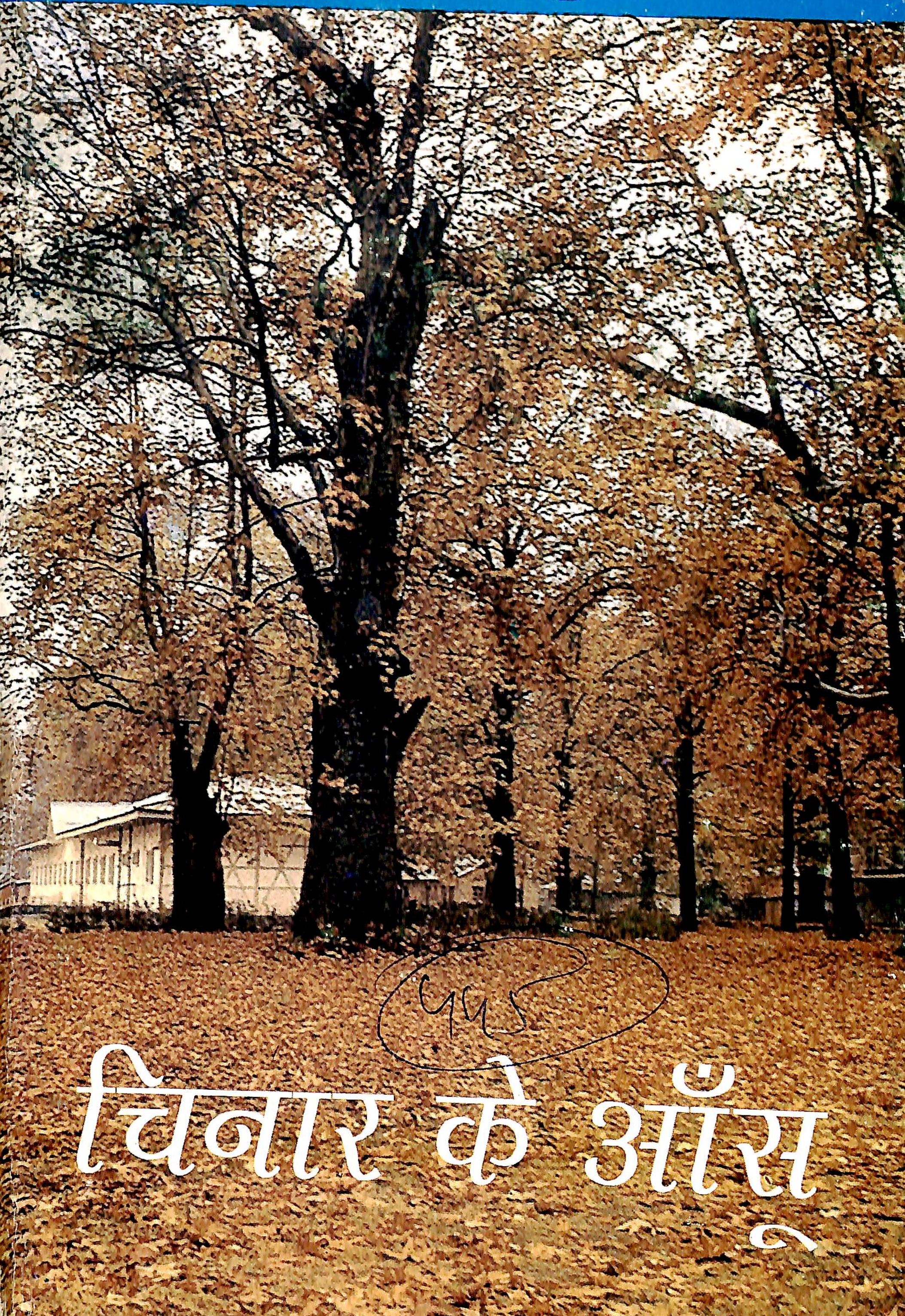
सुनीता रैना



चिनार के आँसू

चिनार के आँसू

सुनीता रैना

पंजाब केसरी

2, प्रिंटिंग प्रेस काम्पनैक्सए रिंग रोड,
नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली - 110052
फोन : 011 - 7181133, 7187248, 7184619, फैक्स - (91) - (11) - 7187700

अ: व: 09:98

दिनांक : 10.03.1998

संवेदनशील भावनाओं और मनोद्‌गारों को लेखनीबद्ध करना कविता है। कविता में कल्पना की उड़ान है, जीवन का गम और गीत है। जिस तरह संगीत मानसिक आनन्द देता है, उसी तरह कविता मानव की सुप्त भावनाओं को जगाती है। कविता कभी अनुराग से भरपूर होती है कभी श्रृगांर से, कभी वीर रस से, कभी करूणा से। लेखनी की धार जब भावनाओं को तराशती है तो सुन्दर कविता का जन्म होता है। लेखनी कविता के कवि ह्रदय में कहीं विद्रोह है, कहीं उम्मीदों की किरण। उनकी भाषा में दम है। हम उनकी सफलता की कदर करते हैं और चाहते है कि सुनीता की कलम उसे शिखर तक पहुंचाए।

अश्विनी कुमार
(अश्विनी कुमार)
स्थानीय सम्पादक

श्री इन्द्रेश कुमार जी
को
सप्रेम भेंट

चिनार
के
आंसू

(काव्य संकलन)

चिनार के आँसू

सुनीता रैना

प्रकाशक का नाम

वैभव प्रकाशन

मुद्रक	:	मोनिका प्रिंटर्स प्राईवेट लि० 332, इंड० ऐरीया, फेस 2, पंचकुला (हरियाणा)। फोन : 0172 - 570402
सर्वाधिकार	:	लेखिकाधीन
प्रथम संस्करन	:	1998
मूल्य	:	75.00

उनकी बंदूक की नोक जितना
तुझ नन्हे कल्हण का सीना
झेल तो न सका अठराह गोलियों का वार
और–स्वर्णिम इतिहास के बदले
लिख डाला तुमने
एक शर्मनाक इतिहास
उनकी बुज़दिली का!

समर्पित................

उन मासूम बच्चों को जो
वंदहामा –(गाँदरबल कश्मीर) हत्याकाण्ड़ में
आतंकवादियों की बंदूक का निशाना बने!

चिनार के
आँसू

मैं डॉ. भूषण लाल कौल, (सीनियर रिर्सचर तथा अध्यक्ष हिन्दी विभाग कश्मीर विश्वविद्यालय) का हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने मुझे इस पुस्तक के प्रकाशन में बहुमूल्य सहयोग दिया।

सुनीता रैणा।

आशीर्वाद

कविता करना तो हमारे महापूरूषों ने साधना का एक रूप करार दिया है। कविता शुद्ध भावना के साथ फन को अक्षरों की माला में पिरोना है, इसीलिए एक सच्ची कविता बाजार की चीज नही हो सकती। कविता पर अगर बाज़ार की धूल जम जाये तो कविता का रंग और रूप घायल हो जाता है। हमारे यहाँ आत्म बुद्धि और आत्म ज्ञान की आवाज़ माता लल के वाक्य हैं जो शताब्दियों के बाद भी हमारा मार्ग दर्शन करते हैं और आत्मा की प्यास को बुझाते हैं। अरिणमाला के बाद आज तक हमारे यहाँ एक भी कवयित्री आगे नहीं आई और हमारी कविता एक रंगी हो गई। मुझे इस बात की खुशी है कि आज एक कवयित्री हमारे सामने सुनीता के रूप में खड़ी है जो हिन्दी के साथ कश्मीरी में भी कविता करती है। उसकी कविता में रस भी है और संगीत भी। यह संगीत किसी साज की देन नहीं बल्कि "नाद बिन्दु" की वह आवाज़ है जिसके संगीत को कुम्बक और कविता की तरह र्दद और कसक है इसके साथ ही उसकी शायरी में कश्मीरी पण्ड़ितों के घर से बेघर हो जाने की दुविधा भी जगह कर गई है मगर यह दुविधा मुस्तकिल नही हो सकती। सुनीता का असली मैदान जज़बात और अहसास को मधुर गीतों के साँचे में डालना है।

सुनीता ने अगर अपना सफर जारी रखा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह अपना यह सफर जारी रखेगी तो वह अरिणमाल और हब्बा खातून की तरह भक्तिवाद के संगीत से हमारे कानों में शहद घोल देगी। हिन्दी सुनीता की मातृभाषा नहीं है, मुझे आशा है कि वह हिन्दी साहित्य में एक न एक दिन जरूर अपने आप को मनवा लेगी।

मैं जानता हूँ कि साहित्य के मैदान में आर्शीवाद देने से काम नही बनता मगर मैं सुनीता को आशीर्वाद दिये बगैर नहीं रह सकता क्योंकि मुझे मालूम है कि मेरा आशीर्वाद जरूर फलदायक होगा।

मोती लाल साकी

पद्मश्री मातीलाल साकी
सरोजनी नगर दिल्ली
28-2-1998

अनुक्रम

(क) तेरे लिये राधा बनूँगी

(ख) माँ

(ग) कैसे रचनाकार हो तुम भी

(घ) आशा के दीप



(क) तेरे लिए राधा बनूँगी

तुम आओ तो मन उजियारी है।

कभी आओ पिया तुम साँझ समय
इक मैं हूँ, इक अँधियारी है
कहीं दीप जले पर दूर बहुत
तुम आओ तो मन उजियारी है।

तू चन्दा पथ की शान बड़ा
मेरे पी का सम्मान बड़ा
वे एक हैं उनसा कोई नहीं
तभी देखो दिशायें सोई नहीं
उनकी सूरत के सामने बस
सूरज तो एक चिंगारी है ... ...

तुम आओ उतरकर तारो यहाँ
मेरी चुनरिया में भर लो जहाँ
उस आलोकित पथ पर है मिलन
जहाँ मिलता है आत्मा से तन-मन
वही जीवन सफल है, पूर्ण है
और मुक्ति का अधिकारी है ... ...

कह दो उन्हें अब विलम्ब न करें
आओ अधरों पर मुरली धरे
मैं देह तजूँ और संग हो लूँ
पिया बोले न बोले मैं बोलूँ
ओ दूर के वासी तुम पर सदा
यह विरहिन् तो बलिहारी है ... ...

यदि मैं चल दी पिया आये
घबराये जिया और अकुलाये
कुछ देर रूकें और लौट जायें
फिर भी मैं सफल हूँ कि वे आये
पिया। प्यार मेरा कई जन्मों तक
तेरे प्यार का बस आभारी है ... ...

12 अगस्त 1991

तू कल्पना में ही नही

तू कल्पना में ही नहीं, तेरा मान मेरे मन में है
मैं तुझ से भिन्न तो कभी न थी, मेरे प्राण तेरे तन में हैं।

1. तेरी बाँसुरी तो बजी कहीं
रस सिक्त हुई ब्रज की मही
तेरी बाँसुरी की तान भी, गूँजी मेरे ही श्रवण में है।

2. तू रहे कहीं, मैं रहूँ कहीं
मिल पाये कब अम्बर मही
पर वास तेरा है मुझमें यूँ, जैसे सुमन उपवन में है।

3. जो तथ्य दर्पण बोले ना
जो भेद मुख भी खोले ना
तुम अँजुलि भर लो पिया, वह प्रेम रस अँसुवन में है।

******* 14 अप्रैल 1992

सखी री

इक चुप्पी, इक खामोशी सी
लेकर आई शाम सखी री।

1. मैं तो निहारूँ राह न आये
पल-पल मेरा मन भरमाये
मन की पीर छिपे न छिपाये
मैं तो हुई बदनाम सखी री।

2. रूठे पिया को कैसे मनाऊँ
बिन उनके तो जी भी न पाऊँ
मन की व्यथा किस-किसको सुनाऊँ
अश्रु बहे अविराम सखी री।

3. मृदु मीत पवन। जा द्वार पिया के
हाल बता आ मेरे जिया के
काहे मिलने का वचन दिया रे
फिर न लिया मेरा नाम सखी री।

4. नटखट, चंचल, साँवला, सुन्दर
तिरछे चरण और मोर परवा सर
लाल अधर, मुरली अधरों पर
वही हैं मेरे श्याम सखी री।

✸✶✸✶✸✶✸ 19नवम्बर 1997

प्रेम

प्रेम मेरा मूक है, कुछ कह नहीं पाता तुम्हे
पर ये आँसू बिन कहे भी, रह नहीं पाता तुम्हे

1. मन तो आँसू चूसकर खुद भार ढोना चाहता
प्रेम की ही अग्नि में यह भस्म होना चाहता
भेद यह है देखना चाहता यह मुसकाता तुम्हें ....

2. कब पतंगा उफ करे है अपने कष्टों के लिए
वह तो तत्पर है सदा हँस-हँस के जलने के लिए
दीप अपने प्रेम हित सब कुछ ही दे जाता तुम्हे ....

3. प्रेम ऐसा त्याग है चाहे कभी विनिमय नही
जैसे खिलते कँवल को भँवरे का कोई भय नही
मैं जो फिर खिलता तो अपने पास फिर लाता तुम्हे ... ...

4. बाँसुरी की राग सुनकर मैं तो सुध-बुध खो गई
देव को पी मान बैठी बावली मैं हो गई
अब तो कह डालो कि है स्वीकार यह नाता तुम्हे ... ...

********* 13 मार्च 1996

भेंट लाई हूँ सुमन

भेंट लाई हूँ सुमन श्रद्धा के तुम स्वीकार लो
मेरे अनुरागी दृगों को दरस तुम इक बार दो

1. देव तेरी अर्चणा में और कुछ ना ला सकी
मैं तो समझूँ धन्य हूँ मैं द्वार तेरे आ सकी
मन का अनहद तान आतुर है इसे झंकार दो ... ...

2. मैंने निज मन को तुम्हारी भेंट में अर्पण किया
अपने अंतर के शिवालों में सदा अर्चण किया
प्राण-दीप जले निरन्तर ज्योति को अधिकार दो ... ...

3. तुम से कुछ मैं माँग लूँ इतना तो साहस नही
क्योंकि मेरी कामनायें भी मेरे बस में नही
तुझको पाकर खुद को खो दूँ मुझको ऐसी हार दो ... .

✸✶✸✶✸✶✸ 21 नवम्बर 1996

आज मेरी कलम

आज मेरी कलम तुम कुछ ऐसा लिखो
तार मन के हिलें, मन का सरगम बजे

मेरे अश्रु की धारा स्याही बने
और विरह की यह अग्नि भी यूँ ही बुझे

मन की वीणा का हर तार गूँजे मगर
ताल और सुर भी दोनों बराबर रहे।

पाँव की थिरकनों से यूँ काँपे मही
हर नदी का प्रवाह और बड़ता रहे।

झूमे अम्बर, हिमालय भी थोड़ा झुके
हिम भी पिघले धरा को भी शीतल करे।

मोड़ ले ये पवन उस दिशा की तरफ
जिस तरफ मेरे प्रीतम अभी हैं गये।

आज अपनी तू शक्ति दिखा दे उन्हें
नाम तेरा रहे, काम मेरा बने।

******* 18 जून 1995

अधर तेरे मुसकायें जो

गीत बनेंगे, साज बजेगा
अधर तेरे मुसकायें जो,
अंग-अंग छूने, दरस दीवानी
बयार भी जाये चारों ओर,
बंद कली भी खिल उठती जब
रात ढले और आये भोर,
चाँद गगन पर दूर है भू से
आस लगाये बैठे चकोर,
बादल बरसे पानी बनकर
साज़ पर उसके नाचे मोर,
ऊँचा उड़ आज़ाद पतंगे
सीमा तेरी बाँधे डोर,
मन्द बयार तुम आज चली हो
खोज में पी की फिर किस ओर,
मरे पी की बजे रे बाँसुरी
बजे रे बाँसुरी युमना के छोर,
बस इतना कह देना उनसे
आ भी जाओ अब चित्तचोर,
जीवन सफल हो भाग जागेगा
मरे घर तुम आये जो,
गीत बनेंगे-साज़ बजेगा
अधर तेरे मुसकायें जो।

14 फरवरी 1989

गीत मेरा तेरी कल्पना

गीत मेरा है बस तेरी ही कल्पना
मेरा संगीत तेरी ही आराधना
साँझ से ही दिया बाट पर रख दिया
पूर्ण कर दूँ आज अपनी अर्चणा।

मेरी माला में अश्रु के मोती लगे
और हृदय की ज्वाल से ज्योति जगे
घी के बदले प्रीत मेरी नित जले
कि सफल हो तप मेरा और साधना।

पथ सजाकर तुझे आह्वान करूँ
अपने तन-मन का विशुद्ध समर्पण करूँ
तुम जो स्वीकार लो प्राण अर्पण करूँ
आ भी जाओ समझ लो मेरी भावना।

अब तो नटखट खेलना मत प्रीत से
मन मचल जाये अंग-अंग के संगीत से
आत्मा का मिलन होगा मनमीत से
हिय तो मेरा चपल है तुम थामना।

******* 16 जुलाई 1995

दीप

तुम जलो निरन्तर
दीप्त कर,
हर दिशा, ड़गर
मेरे भावों की
इस तिमिर में राह
स्पष्ट नही,
इस राह में तिमिर की
सीमा नहीं,
जिस राह में अहम् की
गन्ध भी हो,
वह राह डगर को
जाती नहीं,
जिस राह पर लक्ष्य ही
अंकित हो,
उस राह पर मेरे साथ चलो
मेरी साधना के
साक्षी बन कर
तुम हर प्रभात
यूँ जलते रहो।

✸✳✸✳✸✳✸ 6 जुलाई 1987

तेरे लिए राधा बनूँगी

तुम कदम्ब के पेड़ की
ऊँची लता पर बैठकर
छिप जाओ पत्तों में अगर
तो मैं तुम्हें आवाज़ दूँगी

बाँसुरी अधरों पे धर
तुम मधुर मीठी तान से
जब-जब पुकारोगे मुझे
मैं ब्रज की ग्वालिन बनूँगी

तुम गोद में ममता की जब
खेलोगे नटखट श्याम रे
मैं अपने आंचल में तुम्हें
लेकर यशोमति माँ बनूँगी

तुम गोपियों के साथ जब
लीला रचोगे रास की
पथ पर खड़ी ले पुष्प मैं
तेरे लिए राधा बनूँगी।

18 सितम्बर 1995

वह जो तुम्हारी प्रतिमा

वह जो तुम्हारी प्रतिमा
खो चुकी थी कभी
अथवा मेरे अहम् के कारण
मुझसे भिन्न हुई थी,
मेरे भावों मे, कल्पना में
उमड़-उमड़कर
उसका निखरा, संवरा रूप
सदा ही आता रहा
परन्तु मैं-निःसहाय सी
उसको न यथार्थ रूप दे पाती
और न ही उससे विनती कर सकती
फिर से आने की,
मेरे बस में तुमने फिर भी
जो शेष रहने दिया
वह मेरी कल्पना शक्ति थी
जिसके कारण
मैं तुम्हारी छवि को
शाब्दिक और भावुक रूप
दे पाती,
फिर एक दिन
तुम्हारी प्रतिमा का
संवरा सा रूप
मुझे उपहार स्वरूप
भेंट किया गया
और तुम्हारे प्रभुत्व के आगे
मेरा अहम अपने-आप
चूर-चूर हो गया।

16 फरवरी 1993

ऐ री सखी

ऐ री सखी
आज मेरा मन तो यूँ ललचाये
जैसे आये पिया, जाये, कभी बॉसुरी बजाये
कहीं दूर छिप जाये री . . . .
मेरा मन उड़ चला गगन में
जैसे पंछी हो पवन में
जैसे सुमन हो उपवन में
जैसे कजरा हो नयन में
जैसे गूँज हो श्रवण में
जैसे बावरिया वन में
जैसे मस्ती हो स्वप्न में
मैं तो दूर से निहारूँ
उन्हें कैसे मैं पुकारूँ
मेरी कल्पना में आये
मेरी सांसों में समाये
अब तो सांझ भी ढली
वे मेरे सामने न आये
कभी मन मेरा अकुलाये
कभी मन मेरा भरमाये
कहूँ क्या रोज-रोज यूँ ही सखी
मुझको वे सताये री, तडपाये री
ऐ री सखी . . . .

****

18 नवम्बर 1991

मेरी कल्पना–महान कल्पना

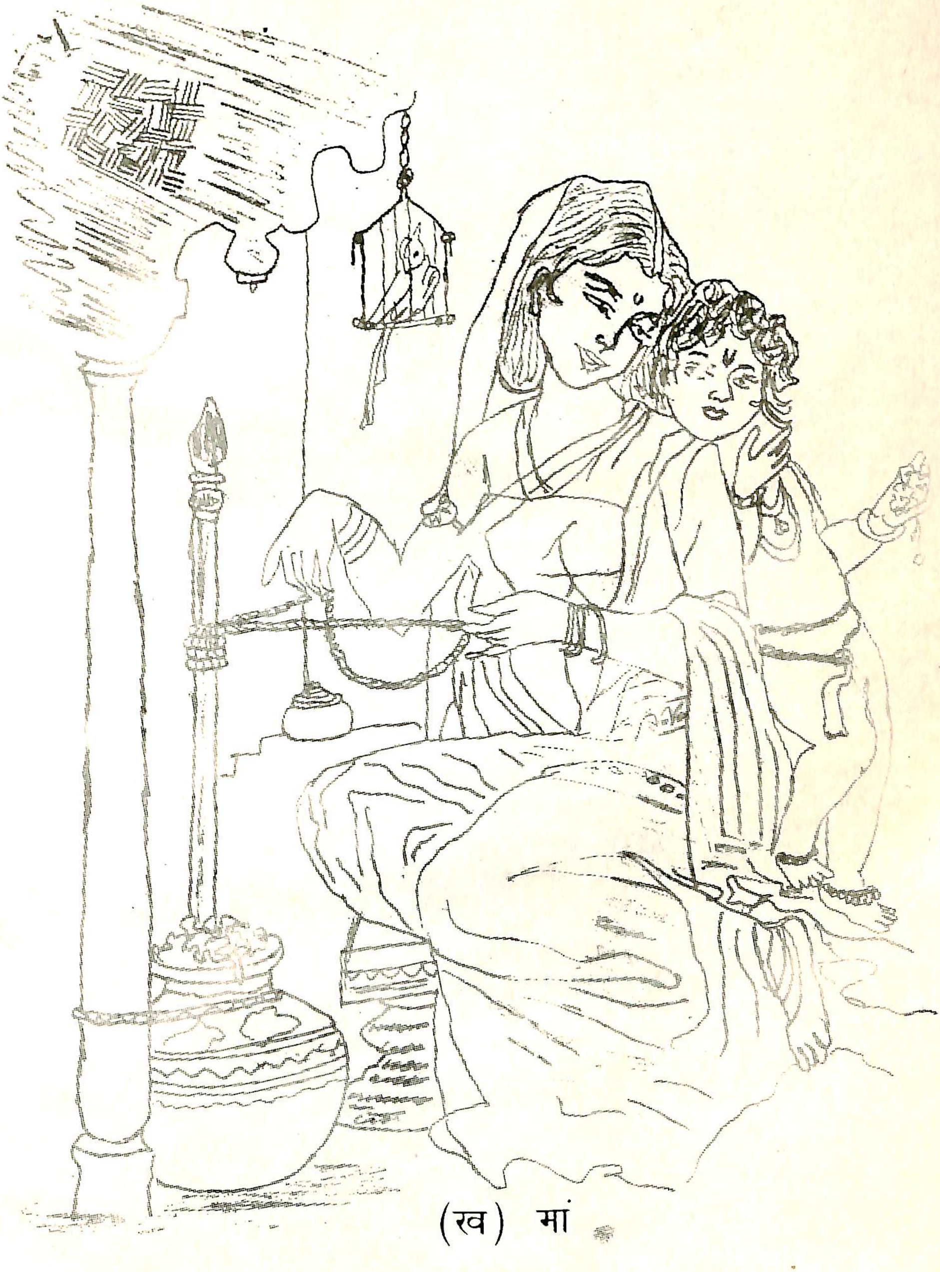
भावों के आधार विराजित
मेरी कल्पना – महान कल्पना
कल्पनाओं में शशि मुख सा,
लिए हुऐ हैं मेरे प्रियतम
कल्पना का प्रत्यक्ष रूप
होगा प्रकट, अवश्य होगा
क्योंकि ... ...
भावों में आवेग है इतना
प्रिय के द्वारे
दस्तक देकर
उन्हें जगायें
प्रेम का आभास दिलायें
भावों में इतनी है शक्ति
निर्मल आँसू
तथ्य सुनायें
प्रीत जगायें
उस प्रेमी को और लुभायें
भावों में इतनी गतिमयता
शब्द बनकर
लय में मिलकर
मीठे से स्वर
उन तक शीश झुकाने जायें
भाव कल्पना – भाव की कविता
भाव स्मरण – भाव समर्पण
भाव विविधरूप करें धारण
मेरी कल्पना के प्रियतम
मिल जायेंगे भाव के माध्यम

✹✶✹✶✹✶✹ 12 दिसम्बर 1987

फिर से आ जाओ जीवन में

भावहीन हिय आज प्रियतम
जीवित-शव है, विवश जीने को
तम में भटका खोज किसी की
बीती हुई स्मृतियाँ लेकर
खो बैठा पहचान उसी की
कभी सहारा जिसका पाकर
गर्व हुआ था अपनेपन का।
कामनाओं की उड़ानें
फिर से ढूँढ रही हैं उनको
उत्तेजित आँसू पीने को
हे प्रियतम।
फिर से आ जाओ जीवन में
अक्षरों के माध्यम से
प्रेरणा का स्रोत बनकर
भावनाओं की लहरों में
केवल "वह" रहो न बनकर
छवि तुम्हारी छिप न सकेगी
है आलोकित मन दर्पण में

******* 21 जनवरी 1987



(ख) मां

तुमने किया यह प्रश्न कैसा?

मोल अपना पूछकर
तुमने किया यह प्रश्न कैसा?

तुम न केवल कल्पना हो
ना कोई साकार सपना
तुम मेरा सर्वस्व तुम पर
है लुटाया प्यार अपना
मेरे अंतर में बसे हो
प्राण जैसे-श्वास जैसा
मोल अपना पूछकर
तुमने किया यह प्रश्न कैसा

तुमको अपना रूप देकर
नाम तक अपना दिलाया
अंग अपना मानकर ही
रक्त तक तुमको पिलाया
तुमको पाकर यूँ लगा
कोई न होगा और ऐसा
मोल अपना पूछकर
तुमने किया यह प्रश्न कैसा?

तुमने मुझको दे दिया है
रूप अद्भुत मातृत्व का
माँ की गौरवशाली पद्वी से
मुझे परिचित किया
कल्पना तक थी न जिसकी
है दिया आनन्द वैसा
मोल अपना पूछकर
तुमने किया यह प्रश्न कैसा?

✹✶✹✶✹✶✹

15 जून 1997

तेरे भोलेपन पे

तेरे हर इक भोलेपन पे
मेरा जीवन सदके-सदके
कानों में मिशरी दें घोल
तेरे तुतले-तुतले बोल
तेरी हर मुस्कान न्यारी
हठ करने की अदा भी प्यारी
भोले-भाले खुद से अपरिचित
दूर गमों से, मस्त प्रसन्नचित
सब अपने, सबसे अपनापन
भीतर-बाहर दर्पण-दर्पण
जीने की तुम चाह जगाते
आशा की तुम राह दिखाते।
मैं तो माँ हूँ ममता सागर
खुश रहती हूँ ममता पाकर
देकर पाने की अभिलाषी
मैं ममता हूँ-ममता वासी

माँ कह जब तुम मुझे बुलाते
अंतर मन के द्वार खुलाते
मस्ती में झूम उठूँ रह-रहके
जैसे नशे में कोई बहके
तेरे हर इक भोलेपन पे
मेरा जीवन-सदके-सदके

**************** 19 मार्च 1997

मैं ऐसी लोरी गाऊँ

तू चन्दा, तू सूरज, तू मेरे गगन का तारा
मैं ऐसी लोरी गाऊँ, कि झूम उठे जग सारा

1. जब साँझ ढले, रतिया आये
मेरे मुन्ने को चाँदनी नहलाये
सोने के बिस्तर पर सोयेगा, मेरा राज दुलारा
मैं ऐसी लोरी गाऊँ ....

2. सपनों की नगरी में ले चल
ओ निंदिया मुन्ने को इक पल
परियों की दुनिया दिखा डालो, जब तक होगा उजियारा।
मैं ऐसी लोरी गाऊँ ....

3. हर कोख में ऐसा लाल पले
हर लाल को ऐसा प्यार मिले
ममता के आँचल में पलता रहे ऐसा रूप न्यारा
मैं ऐसी लोरी गाऊँ ....

****

18 अप्रैल 1993

मेरे पास आ

कबसे बनी हूँ यशोद्धा
तू श्याम बन मेरे पास आ

1. ममता की तान को छेड़ने
ग्वालों के संग फिर खेलने
फिर मस्त हो बंसी बजा
तू श्याम बन मेरे पास आ

2. आँचल की छाँव में बैठकर
तू छटपटा कुछ इधर-उधर
छिप छिप के मुझको यूँ सता
तू श्याम बन मेरे पास आ

3. मैं ढूँढ लूँ खो जा रे तू
मेरी बाँह पर सो जा रे तू
सुन रात भर मेरी लोरियाँ
तू श्याम बन मेरे पास आ

4. सिर ताज मोर पखा धरे
शोभित हो तिरछे चरण धरे
अधरों पे बंसी ले मुस्करा
तू श्याम बन मेरे पास आ।

******** 4 अप्रैल 1994

माँ तेरा आँचल

माँ तेरा आँचल मुझे सुख का लगे भण्डार है
क्यों न छिप जाऊँ मैं इसमें यह मेरा संसार है

1. छाँव में आँचल के तेरे
हैं बँधे यूँ भाग्य मेरे
बिन तेरे जाऊँ कहाँ मैं
ठोर ना कोई जहाँ में
प्राण दाती तू ही मेरे जीव का आधार है।

2. ठुमकता चलकर गिरा जब
बाँह ने थामा तेरी तब
बोल पहला मुख पे आया
माँ कहा और मुस्कराया
वक्ष पर तेरे धरा सर उमड़ आया प्यार है।

3. मैं स्वयं से भी अपरिचित
हूँ अबोधक मैं चपल-चित्त
है तो नन्हीं जान मेरी
पर बनूँगा शान तेरी
प्राण-तन पर भी ओ माँ पहले तेरा अधिकार है।

4. धन्य है ममता तुम्हारी
ना कहीं समता तुम्हारी
तुम सदा आशिष बनकर
संग रहना हर कदम पर
देव का है वास तुझमें, शक्ति तू साकार है।

29 अक्तूबर 1997

मेरा बचपन लौट आया था

निज भावों मे उलझ-उलझकर
तेरा रूप, तुम्हारी प्रतिमा,
पाकर जब भी ध्यान लगाया
तेरा हँसता कमल-मुख पाया,
तीखे नयन तो टेढ़ी भौहें
उस पर चाँद ललाट भी सोहे
गाल गुलाल, तो अधर रसीले
मोर परवा सिर, चरण लचीले
ठुमक-ठुमक चलना तुतलाना
रोज़ यशोदा माँ को सताना
इसी रूप की कल्पना से
मेरा वात्सल्य जाग उठा था।

... ...

मैंने भी सपने संजोये
पर न कभी नैन भिगोये
अनबोले शब्दों की भाषा
केवल थी ममता की आशा
आशा का यह दीप जला के
बैठी थी मैं जन्म-जन्म से

मैने पसारा आँचल अपना
विनती कर माँगा इक सपना
जिस सपने का सत्य तुम्हीं थे
माँगा मैंने तुमको तुम्हीं से
तुमने हँसकर हामी भर ली
क्योंकि मैंने आह्वान किया था

... ...

तुम आये मैं निज में खोई
रैन दिवस इक पल न सोई
पालने में जब तुम्हें झुलाया
मेरी लोरियों में सुर आया
तुम खेले आँगन में मेरे
वहीं लुप्त हो गये अंधेरे
तुम जो हँसे हुई भोर सुहानी
रोये तो सावन की रवानी
धूल से लथपथ फिर हठ करना
मुँह में पल-पल मिट्टी भरना
मोहित होकर चूमा मैंने
मेरा बचपन लौट आया था

****

24 फरवरी 1996



(ग) कैसे रचनाकार हो तुम भी

प्रातः किरण

रैन के अँधियारे से निकलकर प्रात: किरण मुसकाई है
उगते सूरज की यह पहली-पहली ही अँगड़ाई है

1. बोल सुरों में घोल के बोले
खग-दल उपवन-उपवन डोले
ड़ाल-ड़ाल पर ले हिचकौले
इत-उत दौड़े हौले-हौले, पवन मे तो तरूणाई है ....

2. भँवरों के गुँजन की बेला
उपवन में फूलों का मेला
मस्त समाँ मौसम अलबेला
तट चूमे पानी का रेला, लहरों मे अरूणाई है ....

3. दूब पर मोती हरे-धरे हैं
दूर गगन से ये उतरे हैं
किरणों से धरती निखरे है
कांति कलश मानो उभरे हैं, छिपकर ओस लजाई है............................

****

12 अगस्त1995

भोर रणथम्भोर की

शांति का आभास अब तक
है प्रभु का वास अब तक
प्रकृति का दृष्य अद्भुत
है संवारे अजब सी रूत
हैं विहग संगीत वादक
अपनी सुन्दरता के वाचक
मोर के पाँव की थिरकन
है मही पर करती विचरन
शुक-पिक के सुर का संगम
नीर की लहरों का सरगम
डूबते सूरज का चित्रण
नग से चाँदनी का आगमन
वस्त्र बिन वे कुछ लतायें
कुछ हरे पत्तों की छायें
सूर्य तो चित्तचोर भी है
भोर रणथम्भोर की है

✷✳✷✳✷✳✷ 6 मार्च 1992

रणथम्भोर :- राजस्थान के सवाई-माधोपुर शहर के पास एक स्थान जहाँ राष्ट्रीय वन्य-प्राणी उद्यान है!

क्या होगा

कलरव से कुछ सुहाने पल
पूरब से अधरों की लाली
उपवन से फूलों का परिमल
मैं चुरा भी लाऊँ तो क्या होगा?

सागर की लहरों से हलचल
सरिता से मधुर-मधुर सरगम
किसी कवि की कलम से एक ग़ज़ल
मैं चुरा भी लाऊँ तो क्या होगा?

नभ से शशि-तारक, कूप से जल
धरा से भाव विनीत मैं लूँ
वसन्त से सरसों की फसल
मैं चुरा भी लाऊँ तो क्या होगा?

दोपहर के अम्बर से अनल
वायु से तीव्र, गतिमयता
नारी के ह्रदय का दृढ़ संबल
मैं चुरा भी लाऊँ तो क्या होगा?

शैशवता में वह छिपा इक बल
यौवन से वह आकर्षण

माँ के आँचल से सुहाने पल
मैं चुरा भी लॉऊ तो क्या होगा?

गाते खग-दल से चहल-पहल
अम्बर पर विचरते मेघ धवल
किसी झील से [illegible] एक कँवल
मैं चुरा भी लॉऊ तो क्या होगा?

✷✶✷✶✷✶✷ 4 फरवरी 1995

कोयल

नील गगन छत, धरा बिछौना मेरा तो सामान यही है
नव कोंपल और दूब सुशोभित मेरा तो परिधान यही है।

1. ओस से अपनी प्यास बुझाऊँ
धरा से चुग-चुग दाने खाऊँ
डाल-डाल पर कूक मचाऊँ
एक राग को मैं दोहराऊँ, मेरा तो यशगान यही है।

2. झौंका पवन का मेरा सरगम
मेघ समूह है मेरा हमदम
पथ में मेरे तारे चमचम
बारिश की बूँदों की छम-छम, मेरा गौरव मान यही है।

3. मेरी तान के सब दीवाने
आती हूँ मैं गीत सुनाने
कोयल हूँ ये सब पहचाने
बोल समझ लेते हैं सयाने सृष्टि का गुणगान यही है।

✸✳✸✳✸✳✸ 18 जुलाई 1996

ओस

उज्जवल-निर्मल रूप लिये मैं, आई धरा पर दूर गगन से
मृदुल-मृदुल तन की आभा में, खोये जन-जन हुए मगन से

1. सूरज ढला तो मैं नित आई
बनकर बूँद धरा पर छाई
मोती के रूप में ढलकर, रंग चुराया हर इक सुमन से ....

2. मोती चुगने हँस जो आये
अपने भ्रम पर खुद शरमाये
पास तो आओ, प्यास बुझाओ, और हँस दी मैं अपने पन से ....

3. खुद को समेटूँ और लज्जाऊँ
धूप के आँचल मैं छिप जाऊँ
रात के अँधियारे में आऊँ भेंट करूँ मैं फिर उपवन से ....

******* 25 अगस्त 1995

यूँ बरस आज घटा

यूँ बरस आज घटा नव सुर में नई तान भी हो
और हो कम्पन सी हवा में जैसे तूफान भी हो

गाँव में डाल पर अम्बवा की कोई तान नही
छिप गई धूल में बस्ती और हैं सुनसान कहीं
कूप और ताल हैं प्यासे उनमें भी जान नहीं
जीव कोई नहीं ऐसा जो परेशान नही।

हो हवा में यूँ नशा झूम के हर इक बहके
मस्तियों के लगे मेले मेरे यहाँ रह-रहके
तू बरस ऐसे कि युग-युग तक ये मिट्टी महके
इस महक से ही मेरे देश की पहचान भी हो।

इस धरा की जो चुनर पीत है, फिर सरसाये
ऐसा पावन और निर्मल जल नभ बरसाये
फिर से झूले पड़े अम्बवा पर जो सावन आये
फिर से अठखेलियाँ घर-घर में हो यौवन आये।

धूप जब दूब के ऊपर गिरी बूँदों पर पड़े
ऐसे चमके हर इक बूँद ज्यों मोती हो झड़े
रात सिमटेगी तो प्रात: का जो सूरज आचढ़े
उसकी कांति में भरा यौवन का अभिमान भी हो।

******* 24 जुलाई 1995

कैसे रचनाकार हो तुम भी

साक्षात रूप हो
प्रत्यक्ष रचना
कहीं सुन्दरता, कहीं शान्ति
कहीं हरियाली, कहीं वीराना
कहीं तुम्हारे स्पष्ट भाव
कहीं मंन स्पर्शी प्रतिमा
कहीं तुम्हारी तीव्र प्रतिभा
जीवन का आनन्द कहीं
कविताओं के छंद कहीं
अलंकारों का स्वतंत्र रूप
रचनाओं का न आदि अन्त
बस तुम्हारी अपनी भाषा
अखिल की परिभाषा
कैसे खोजूँ अपना जीवन
प्रिय से अपनापन
गूढ़ रचना है तुम्हारी
कैसे रचनाकार हो तुम भी
मेरी रचनाओं में तुम हो
सर्वस्व तुम्हीं तुम
सीमित अक्षर
सीमित स्वर हैं
क्योंकि-मैं भी तुम्हारी रचना का
एक अंश हूँ-एक सीमा हूँ।

27 मार्च 1989

चाँदनी

चाँदनी का रूप लेकर
बादलों के बीच में से
झाँकती बाहर लता से
यों निकलकर आ रही है।
स्वर्णिम आभा को लेकर
है बिखेरे हर दिशा में
कान्ति की लहरों में वह
वसुन्दरा को यों नहला रही है।
साँझ से लेकर निशा तक
फिर निशा से भोर तक भी
उस स्थिर, सुन्दर, सुदृढ़ से
व्योम को बहला रही है।
देखकर वह नीर स्वर्णिम
है बहकती चूमने को
रूप अपना पा के उसमें
हँस के यों शरमा रही है।
क्यों है अटकी पेड़ पर तू
आ, उतर आवेश में लूँ
क्यों मेरे भावों से लड़कर
मुझको यों अकुला रही है।

✸✳✸✳✸✳ 29 फरवरी 1992

पवन

जग के अगणित वस्तु छूकर, मैं आनन्दित हो गई
रूप ना देखा किसी ने, फिर भी बिम्बित हो गई।

1. मैंने देखी है चरम सीमा भी उँचाई की यूँ
मैं हिमालय को भी जैसे नित झुलाया ही करूँ
और गगन के बादलों से भी मैं परिचित हो गई।

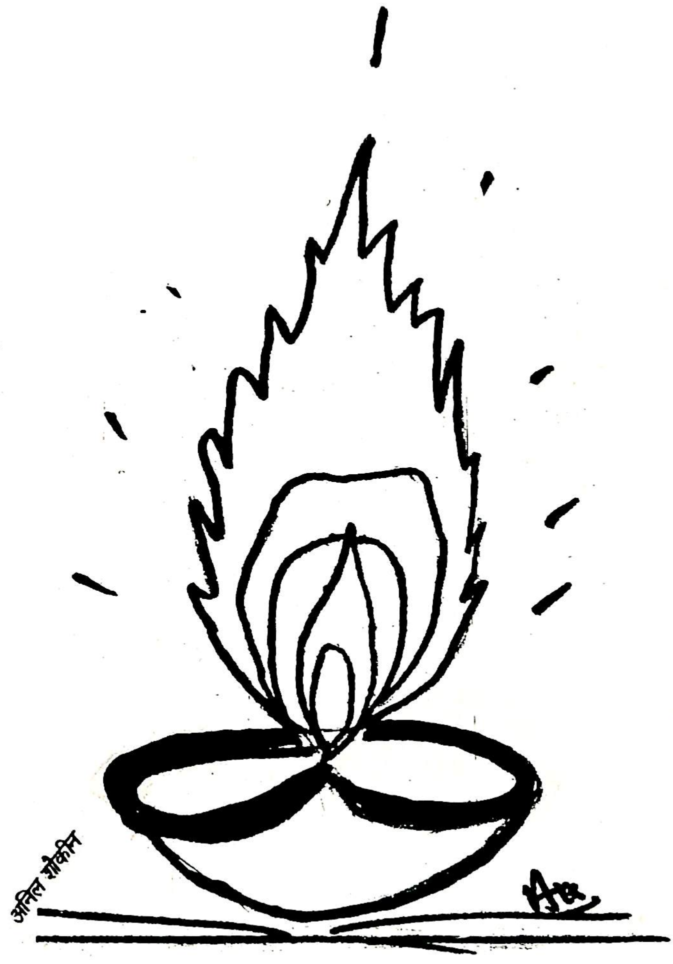
2. मैंने सरसों की फसल को सबसे पहले है छुआ
धान की खेती में मेरा आगमन ज्यूँ ही हुआ
खेतिहर की मान लो शोभा ही विकसित हो गई।

3. पार करने राम जब केवट की नैया पर चढ़े
मैंने चूमे चरण तब उनके कदम आगे बढ़े
नीर अमृत हो गया, छू उसे मैं पुलकित हो गई।

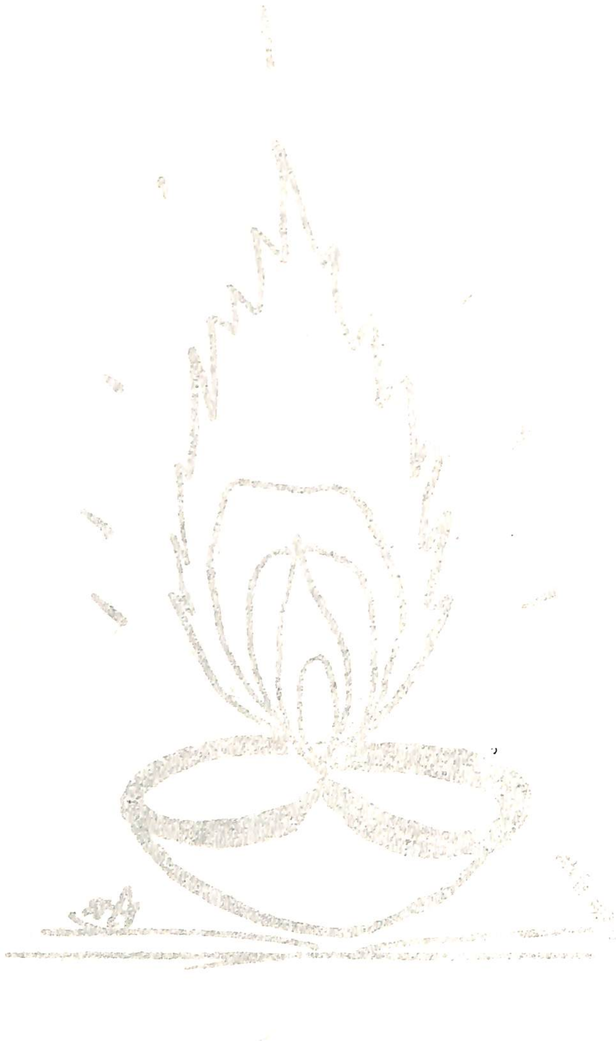
4. जब स्वराजी ध्वज को पहली बार फहराया गया
तब भी मेरे रूप से ही उसको दर्शाया गया
राष्ट्र-पूजन गीत बनकर भी मैं मुखरित हो गई।

5. मैं युगों से सृष्टि की भाषा हूँ परिभाषा नहीं
रूप कोई पा सकूँ यह मेरी अभिलाषा नहीं
शाश्वत इतिहास मेरा मैं तो अमृत हो गई।

✸✶✸✶✸✶✸ 2 मई 1995



(घ) आशा के दीप



ਪ੍ਰਿਤ ਕਿ ਜਗਮਗ (ਝ)

ऐसा मुझे जीवन दे

भाव समर्पित, सेवा कर्म हो ऐसा मुझे जीवन दे
निर्मल, निर्भय, स्थिर, सुदृढ़ और सुन्दर सा इक मन दे

1. बोल मधुर मुखरित हों मुख से
मन हो प्रसन्न औरों के सुख से
भाव सुकोमल मन दर्पण हो
सेवा हित तन-मन अर्पण हो
बचपन जैसा भोलापन दे, या फिर से बचपन दे ... ...

2. निज् कर्मो से भाग्य संवारूँ
अपने सुख, पर दुख पर वारूँ
जिसमें किसी की पीर छिपी हो
ऐसे सुख को ना स्वीकारूँ
औरों की पीडा से कराहे मन को ऐसी चुबन दे ... ...

3. निज हित और पर हित का अंतर
ना हो कभी भी मेरे भीतर
अपनी सभ्यता अपनी धरा पर
नित-नित तन-मन हों न्यौछावर
शीश धरूँ कण-कण मिट्टी का मुझको ऐसी लगन दे ... ...

✸✳✸✳✸✳✸ 29 जनवरी 1997

संकल्प

नव चेतना से जन्मी, नव प्रेरणा की धारा
सेवा के हेतु हमने, जन-जन को है पुकारा
सिद्धि है लक्ष्य अपना, सत्कर्म अपना नारा
संकल्प है हमारा, संकल्प है हमारा।

अमृत वचन हैं अपने, संकल्प दृढ़ है अपना
संजीवनी का रस पी, साकार कर लें सपना
माँ शारदा को अर्पित, क्षण-क्षण ये मन हमारा
संकल्प है हमारा, संकल्प है हमारा।

है वंदनीय अपनी, वो संस्कृति की थाती
है सभ्यता हमारी, उज्जवल दिये की बाती
संभव है हम बनेंगे, नव युग का नव सहारा
संकल्प है हमारा, संकल्प है हमारा।

ऋषियों के हम हैं वंशज, सत्कर्म तो करेंगे
सेवा धर्म है अपना, संकल्प ये करेंगे
सिद्धि की प्राप्ति तो, अधिकार है हमारा
संकल्प है हमारा, संकल्प है हमारा।

******* 12 अगस्त 1997

आशा के दीप

आशा के दीप जलकर, उज्जवल हो जगमगाये
नव प्राण ज्योति में भर, नव कामना जगाये

1. हम दीप यह जलाकर
रख दें हर एक पथ पर
आलोक देखने को
जहाँ लोग भी हैं तत्पर

शिक्षा का दीप लेकर, हर इक दिशा में जायें
नव प्राण ज्योति ... ...

2. यह दीप ले चलें हम
जहाँ मन के बीच है तम
आँचल जहाँ है भीगा
है खून से धरा नम

मानव के बीच पलते, दानव को हम भगायें
नव प्राण ज्योति ... ...

3. इस दीप को लिये संग
दे बना इसे ही संबल
समता की रोशनी में
कर देश को तू उज्जवल

सब साथ झेल लें हम, सब साथ मुसकरायें।
नव प्राण ज्योति ... ...

✷✶✷✶✷✶✷

18 मई 1988

त्याग

जहाँ त्याग की हो भावना विनिमय न हो
जहाँ तप और हो साधना यह तड़प न हो
सुख और दुखों के बीच तक अंतर न हो
घृणा और प्रेम के भाव का भी असर न हो
जहाँ लीन होकर आत्मा ही समक्ष हो
हो आँख बस में रहने को मन कक्ष हो
जीवन-मरण के प्रश्न का न प्रश्न हो
जहाँ शोक न हो और न कोई जश्न हो

जहाँ भूख न हो और न प्यास हो
समय की गति का न कुछ आभास हो
जीवन की हर एक कामना से दूर चल
जहाँ स्वयं ही में ब्रह्म का आवास हो
मेरा हाथ थामो आज तुम मेरे सखा
जीवन की इन ऊँचाइयों तक ले चलो।

****

6 सितम्बर 1995

भारत की नारी

शांति का श्रृंगार अभी तक
चेहरे पर इसके जीवित है
बड़ तो चुकी है आगे यह भी
किन्तु कदम इसके सीमित हैं।

मान अभी तक इसके मन में
आदर्शो का-रीति, प्रथा का
पर्दो से सिमटी है अब तक
लाज की करती रखवाली यह।

बनकर बहन भाई से अपनी
रखवाली का वचन है लेती
धागे की इक डोर से बाँधे
बन्धन को यह दृड़ कर लेती।

पत्नी रूप में दासी बनकर
स्वामी के मन मोद का कारण
उसके चरणों की रज, सजकर
माँग में अपनी करती धारण

ममता से बेटे को कसकर
वक्ष पर अपने ले माँ बनकर
कदम-कदम पर साथ दे उसका
जीवन-ज्योति का कारण बनकर।

कौन करेगा समता इसकी
पूरे भव में कोई नहीं
भव इतिहास पर नाम हो इसका
सुन्दर शब्दों में सर्वोपरि।

कोमलता और दया ही इसके
मन-मानस पर अंकित हैं
देवी या-भारत की नारी
हर दीपक से दीपित हैं।

✵✳✵✳✵✳✵

13 मार्च 1988

स्वर गूँज रहे थे

चारों ओर सन्नाटा था पर
स्वर कुछ गूँज रहे थे कब से
हम भी निकल चुके थे कब के
पुरानी स्मृतियाँ उमड़-उमड़कर
मन में आई चलते-चलते
कि सहसा ... ...

पद्‌चाप सुनाई दी हल्की
मुड़कर देखा, अपनी छाया
उन शब्दों की काया
जिन्हें हम ... ...

जीवन दे चुके थे कभी
कल्पना, आशा, दुख-सुख
जिनके आगे झुके थे कभी
उन्हीं की ये आवाजें थीं
व्यंग्य भरी मुस्कान
हँसी के ठहाके
रोने की सिसकियाँ
आँसुओं की निर्मलधारा
प्रतिरोध की भावना
हे कायर ... ...

यर्थाथता से भाग रहे हो
जीवन से न भाग सकोगे।

****

24 अप्रैल 1989

मेरी कामना

हवाओं ने जब स्वर बिखेरे जहाँ में
मधुर गीत गूँजे गहन आसमाँ में
सुबह की किरण ने चूमा हवा को
खिल उठी कली महकाया हवा को
इशारे किये सरसों की बालियों ने
हो जैसे सजी प्रकृति थालियों में
दिशायें भी गूँजी, विहग चहचहाये
मुसकराते फूलों पर भँवरे भी गायें
यह मस्ती भरा आज वातावरण है
है हलचल कहीं और कोई प्रसन्न है
हुई आज मैं भी कुछ ऐसी भावुक
मिला जैसे मेरा माँगा हुआ सुख
उठे हाथ मेरे तो मैने यह माँगा
मेरी कल्पना में भी शक्ति के स्वर हों
हो गुँजित मेरे शब्द हर इक दिशा में
मेरी कला की भी लंबी उमर हो।

*******2 दिसम्बर 1989

सड़क की एक ओर

सड़क की एक ओर
औंधे मुँह
मुर्छित पड़ा
एक अर्धनग्न शरीर
जिस पर-सैंकड़ों भिनकती हुई मक्खियाँ
निड़र विचर रही थीं
और पास खड़ा
लगातार भौंकता हुआ
एक कुत्ता
अपनी दुम हिलाता
इधर-उधर
आँखे फाड़-फाड़ कर
देख रहा था।
मानो, पथिकों का ध्यान
उस शरीर की ओर
आकर्षित कर रहा था।
पर- किसी के न रूकने पर
मुँह लटकाये
एक टक देखता हुआ
यूँ पछतावा कर रहा था
कि जैसे-
मनुष्य की व्यस्तता में
मानवीय भावना
उसे, मरती हुई
दिखाई दे रही थी।

****

7 जून 1997

मुझे अपने रास्ते भाते हैं

तुम व्यर्थ ही कोस रहे हो
मेरे अकेलेपन को
ये मेरे मौन का आधार नही
किन्तु, सार्थक जीवन का
विश्वस्नीय सहारा है।
कामनाओं की उँची उड़ान
भर सकती हूँ मैं
सुन्दर काल्पनिक संसार में
कुछ देर रह सकती हूँ मैं
मधुमिश्रित वेदना का अनुभव
किस भाँति कर सकती हूँ मैं
मुखरित पर पीड़ा में
अपना दर्द मिला सकती हूँ मैं
... ...
तनहाई में खो जाने की
कोई आशंका मन में नही

खोकर अपनी ही खोज में जब
चल दिये खुद को पायेगें कहीं
डर है, केवल इस भीड़ का है
खोया जो कोई तो खो ही गया
कोई खोजने वाला होगा नही
पहचाने कोई, बोलेगा नही।
इनके तो भेद निराले हैं
हमसफर कहें, संग चले नही
मित्रं कहें आसानी से,
तुम कौन हो? फिर पूछेंगे वही
दर्पण में ये क्या देखेंगे भला
इनमें इतना साहस ही नही
डरते हैं ये सच्चाई से
कड़वाहट की अँगडाई से
जीवन की हर ऊँचाई पर
ये अपने आप को पाते हैं
ये अपनी राह पर चलते रहें
मुझे अपने रास्ते भाते हैं।

****

19 सितम्बर1988

अबला से सबला

चुप्पी – एक विशाल सागर
नारी के हृदय
मस्तिष्क में
फूटती नही एक बूँद भी
निर्मल जल की
उसके नयनों द्वारा
सहती है
सहजता से
हर अत्याचार
भाग्य रेखा मानकर
या, नारी होने का
अभिशान समझकर।
परन्तु ... ...
सीमायें फांद सागर
बाड़ का रूप धारण कर
आया – तो
बस्तियाँ ढह जायेंगी
पड़ेगा अकाल
सृष्टि का कण – कण
त्रस्त हो जाएगा
इतिहास धिक्कारेगा
तुम सबको
आते युगों में।
जिस इतिहास की रचना
वह आँसुओं से करेगी
क्योंकि – नारी
अबला से
सबला बन चुकी है।

✸✳✸✳✸✳✸

24 जुलाई 1996

मेरे आशियाने में

मैने नीड़ का निर्माण किया
फिर से,
सूखे तिनके लेकर
उस ऊँचे वृक्ष पर
पत्तों की छाया में
जिसे कोई
देख न पाये
क्योंकि – मैंने देखा
वह आखेटक
जिसने मेरा
तोड़ दिया था
आशियाना,
आज बिल्कुल
उसी तरह
रोया, गिड़गिड़ाया
जैसे कभी मैं रोया था।
मुझे देख कह उठा ...
अरे पंछी।

आज समझ गया
तुम्हारी पीड़ा को,
जब तुम्हें ...
मैने बेघर किया था।
आज मैं बेघर होकर
आया हूँ
इस पेड़ तले
क्या मुझे शरण मिलेगी?
मैने कहा
ओ मानव।
यदि तुम मेरे
छोटे से आशियाने में
निर्वाह कर पाओ तो
तुम्हारा स्वागत है
मेरे आशियाने में।

******* 4 दिसम्बर 1995

नमन

मेरा परिचय मुझे नही जब
जग को क्या दूँ परिचय अपना?
जग के ही तो मंच पर आकर
नाटक खेल चुके हैं वे भी,
नाम अमर है अब तक जिनका
जिनका परिचय जग देता है
उनके कुछ अन्दाज थे अपने
अपनी रचना, अपना अभिनय
कला पुजारी वे कुछ भिन्न थे
पावन इतने जैसे अग्नि थे
शब्द भी जिनकी मुस्कानों में
दौड़ के आकर शरण थे लेते,
वे आकाश थे, खुद ही भू थे
उनकी कला में स्वयं प्रभु थे।
उनकी रचनाओं से होगा
मेरा जीवन भी कृतार्थ।

मैं पंथी, पाथेय सहश
रचनाओं का हो भावार्थ,
लिया उन्हें आवेश में जिसने
वे थीं माँ धरती की भुजायें
वे सम्मान के अधिकारी थे
मेरा भी उनको नमन हो
इसी प्रकृति के आँचल में
मेरी भी जीवन अर्पण हो

✹✳✹✳✹✳✹

4 जनवरी 1991

लघु प्राणी बोल उठे

प्रातः एक दिन
मेरी भेंट हुई पक्षियों से
देखा–वही पुराने ढंग
वही मधुबोल
वही चहकना
और विचरना इसी गगन में।
तो–मैने गर्व से इठलाते
अपना परिचय देते कहा
देखो ... .
हम प्रगतिशील प्राणी,
अपनी होशियारी से
हमने, प्रकृति के अनेकों तत्व
वश में किए,
विज्ञान के आलोक से
हम दाता बने कई जानों के
रहने के ढंग बदल डाले
और सहज बनाया जीवन को
हर आन में शान हमारी है
अब मानव जाति ही न्यारी है।

वह लघु प्राणी भी बोल उठे
हाँ मानव ... ...
तुम उन्नति के पथ पर हो
ये हम भी सराहा करते हैं
पर गर्व तुम्हें जिस बात का है
उसे दुख हम पुकारा करते हैं
बात विज्ञान या ज्ञान की हो
पहनावे या परिधान की हो
तुम भूल गए अपनी भाषा
उन्नति की देते हो परिभाषा
तुम्हें राष्ट्र-भाषा का मान नही
तुम पर भाषा आधीन हो
हम प्रकृति की आवाज हैं
तुम कृत्रिमता के बीन हो
अब हम तुमसे कमज़ोर हैं, या
तुम्ही हमसे क्षीण हो?

******* 26 मई 1987

प्रेरणा

अथाह सागर की गहराई में
इन उमड़ती जल तरंगों में
मेरा प्रतिबिम्ब और … … …
जीवन का आकार है।
वास्तव में … … …
हम भी कूद पड़े हैं इसमें
एक मापदण्ड लिए हाथ में
इसकी तलहीन गहराई को
मापने की आशा से भी,
इसकी रहस्यमय परछाई को
छूने की अभिलाषा से भी।
निहारते हैं छोर पर जो
वह भी देख ही पायेंगे
मुझे ढकेलेंगी ये लहरें
या साथ ले जायेंगे
देखने वालो मेरा साहस
कुछ तो हाथ तुम्हारे है
कदम तो आगे तब ही बढ़ेंगे
जब पायेंगे सहारे हैं
मेरी प्ररेणा तुम्हीं बने जो
सागर मुझमें समायेगा
मेरी प्रतीक्षा तब भी रहेगी
प्रेरित करने कोई आयेगा।

✸✳✸✳✸✳✸ 15 दिसम्बर 1988

ये होड़ का युग है

इस भीड़ को चीरकर
आगे जाने की उत्सुक्ता
हर एक चेहरे पर स्पष्ट
बिना पथ जाने-
किसी भी प्रकार हर कोई
मंज़िल पर पहुँचना चाहता है
बिना मंज़िल जाने-
एक दूसरे को पीछे देखने
और विजयी बनकर
प्रसिद्धि पाना ही
लक्ष्य है इनका
इस दौड़ में
किसी ने सहसा
विस्मित होकर
मेरी ओर
प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा
शायद इसलिए कि-
मैं अबोध बालक की भांति
केवल निहार रहा हूँ।

जबकि मुझे भी
वह अपने साथ
दौड़ता देखना चाहते हैं
मैं पथ की खोज में दिग्भ्रान्त
वह होड़ के पथ पर
अग्रसर,
कह रहे थे मुझसे–
बड़ते जाओ–बड़ते जाओ
यह होड़ का युग है।

✸✳✸✳✸✳✸ 26 नवम्बर, 1988

हम सब पंथी

धवल साड़ी में लिपटी
कोई रूपवन्त कन्या
घूँघट में मुँह छिपाये
लाज के मारे बाहों में सिमटकर
समस्त प्रकृति को गोद लिए वह
यौवन की मस्ती सी मस्त
शिशुवृति सी कुछ अनजान,
शांति से कुछ अधिक ही शान्त।
सायं से प्रातः तक चलते-चलते
घुटनों को थामे बैठी श्रान्त।
हर एक गुजरते पंथी से वह
जानने की रखती आस
जीवन भर की भटकी हूँ मैं ... ...
कहाँ है प्रियतम करते वास?
हर एक पंथी ... ...
बोलने का यत्न तो करता है

पर–स्वर फूटते नहीं
धागे भी टूटते नहीं,
अब उसको बतलाये कौन
तेरी भाँति सब हैं पंथी
पहुंचा हुआ न कोई विजयेता
उसकी ही खोज में भटके
हम भी पंथी
हम सब हैं पंथी

✸✶✸✶✸✶✸ 15 जनवरी 1986

आज की नारी

आँचल नही भिगोयेगी
नही सहमेगी
अंतर ही अंतर
नही खोखला करेगी
अपने मन को,
भीतर ही भीतर।
नही सहेगी अत्याचार
और नही रोयेगी
पराधीनता के भय से
आज की नारी।

✸✳✸✳✸ 4 फरवरी 1996

हम उनके गीत गाते हैं

अमर खुद का किया जीवन, हमें जीवन दिशा देकर
हैं जीवन जी रहे हम भी, उन्हीं से प्रेरणा लेकर
जो कर्त्तव्य और जीवन के बन्धन को निभाते हैं
हम उनके गीत गाते हैं, उन्ही के गीत गाते हैं

किया सुख त्याग भोगे कष्ट अपनाये वो कंटक पथ
वचन की आन, कुल की शान को जाने दिया न व्यर्थ
उसी श्रीराम के आदर्श अपना मन लुभाते हैं
हम उनके गीत गाते हैं, उन्हीं के गीत गाते हैं

गुरू गोविन्द के बच्चे जो दीवारों में चुनवाये
धर्म के हित बहादुर तेग अपना शीश कटवाये
उन्हीं के त्याग के आगे, मस्तक हम नवाते हैं
हम उनके गीत गाते हैं, उन्हीं के गीत गाते हैं

धर्म और न्याय ने अन्याय पर पाई विजय ऐसी
बने खुद सारथी श्रीकृष्ण, अर्जुन को दी रणनीती
कर्म से फल, सफल जीवन यही उपदेश पाते हैं
हम उनके गीत गाते हैं, उन्हीं के गीत गाते हैं

शिवाजी और राणा ने कभी है हार क्या मानी?
लडी थी मर्द बन संघर्ष कर झांसी की महारानी
उन्हीं वीरों से वीरो झोड़ने अपने भी नाते हैं
हम उनके गीत गाते हैं, उन्हीं के गीत गाते हैं

****

14 मार्च 1997



(ड़) उतिष्ट भारत

भारत स्तुति

स्तुति में तेरी मिल सकें कुछ सुर मेरे
छवि तेरी, तेरा रूप उतरे उर मेरे
हर प्रातः – दिन, निशि – साँझ तेरे नाम हो
जन्मभूमि भारती तुझे प्रणाम हो।

यह सिद्ध हो चुका है तू पावन महान
मिट्टी का मान इतना है कण – कण में ज्ञान
फिर धर्म क्यों न बल हो और परिणाम हो
जन्मभूमि भारती तुझे प्रणाम हो।

जिस देश की हर नारी सीता बन सके
जिसकी माटी लक्ष्मण को जन सके
आदर्श पालने को जहाँ राम हो।
जन्मभूमि भारती तुझे प्रणाम हो।

है धन्य वह नगराज जिसपर तप हुआ
शिव की शरण में रहकर उसने नब छुआ
गंगा झटा से बहने को अविराम हो
जन्मभूमि भारती तुझे प्रणाम हो।

जहाँ बाँसुरी की राग में हों मस्तियाँ
गोकुल की मान लो वहीं पर बस्तियाँ
गैया चरा रहे जहाँ घनश्याम हो
जन्मभूमि भारती तुझे प्रणाम हो।

******* 2 मई 1997

दे वर ऐसा

हे शिव शंकर, हे शिव शंकर, दे वर ऐसा आज के दिन
तेरे तप में, नाम के जप में, बीते हमारा पल छिन-छिन

1. तन-मन से हैं दास तुम्हारे
बख्शो प्रभु तुम अवगुण सारे
हम हैं अकर्मी कर्म न जाने
मानस जन्म को ना पहचाने
तुम हो दयावर, ऐसा कर दो, ना हो हमें खुद ही से घिन्न
तेरे तप में, नाम के जप में, बीते हमारा पल छिन-छिन

2. उग्र हुआ है आज का मानव
भटके ऐसे बनकर दानव
न्याय, धर्म तो दूर है उससे
प्रकृति तक मजबूर है उससे
लाज हमारी, हाथ तुम्हारे, न हो धर्म का नाम मलिन
तेरे तप में, नाम के जप में, बीते हमारा पल छिन-छिन

3. दान दयावर दो शक्ति का
मान कृपाकर दो भक्ति का
कुशल सभी सब मंगल कर दो
हे प्रभुवर कुछ ऐसा वर दो

आत्मज्ञान से दीप्ति मन हो, और भगायें तम प्रतिदिन
तेरे तप में नाम के जप में, बीते हमारा पल छिन-छिन।

******* 18 फरवरी 1997

चल रे तू

अब भाग्य को न कोस यूँ ही बैठकर
अधिकार माँगने को तू न देर कर
ललकार है, समय की माँग है यही
जो सत्य है, उसे तू स्वीकार कर

उठ देश के लिए तू पथ पर आ उतर
ये मंज़िलें भी कह रहीं पुकारकर
ये लोक हित, राष्ट्र हित का काम है
तू शस्त्र पे शक्ति का तो वार कर

कुछ विघ्न तेरी राह में तो आयेंगे
पीछे न हट तू डर के उनसे हारकर
सहमी सी भावना को छोड़ दे यहीं
अब तो न जी तू अपने मन को मारकर

ले देश का भविष्य अपने हाथ में
और माँग हाथ सबका तू पुकारकर
कर्त्तव्य और हक को ध्यान में लिये
हर नीति को बदल दे इस आधार पर

तूफाँ की चाल चल रे तू
आँधी की चाल चल रे तू
खायेगा ठोकरें तो क्या
खा-खा के फिर संभल रे तू

मुड़कर न देख, सामने
अपनी गति में चल रे तू
चल रे तू, चल रे तू
चल रे तू, चल रे तू।

24 अप्रैल 1994

छाँव में तिरंगे की

छाँव में तिरंगे की यह जिंदगी गुज़ारने
युवाशक्ति बढ़ रही है राष्ट्र को संवारने

चले हैं एक पंक्ति में ध्वजा को हाथ में लिये
है लक्ष्य पर नजर चलेंगे रज को साथ में लिये,
अथक है यह सफर तो मंज़िलों को जीत पायेंगे
इतिहास हम बलिदान का, फिर आज दोहरायेंगे
न डर है आज शत्रु का, न प्यार अपनी जान से
सफल करेंगे जन्म अपना, मर मिटेंगें आन से।
निर्माण नव करें हर एक नीति को बदल के हम
इस भू को रूप दें नया, पवित्र कर्म–भूमि सम।
पद्चाप गूँज कर गगन में दूर–दूर जायेंगे
तारागणों को, रवि को, शशि को साक्षी बनायेंगे।

यह जन्मभूमि अपनी है तो पुण्यभूमि भी यही
जो जन्म दे वह माँ है, माँ को जन्मे मातामही
इसकी रज पर रक्त से इतिहास नव बनायेंगे
हम पर्वतों की चोटियों पर ध्वज को फहरायेंगे।

******* 2 नवम्बर 1995

समहगान

चन्दा की छवि में हम हैं बसे, इस धरती का परिधान हैं हम
उगते सूरज की किरणों से, जो फूटे वह मुसकान हैं हम

1. जिस देश में जन-जन स्वाभिमानी
जिस देश में कवियों की वाणी
उस भारत माँ के नन्दन हैं
जहाँ मनुष्य का मनुष्य से बन्धन है
वीरों की माँ विजयी हो सदा, इस माँ का मान अभिमान हैं हम ... ...

2. जिस देश में गंगा की लहरें
जहाँ रहते हिमालय के पहरे
जिस देश की नारी में लाज-लज्जा
जहाँ प्रकृति का कण-कण है सजा
जय-हिन्द जहाँ का नारा है, उस हिन्द की आन हैं, शान हैं हम ... ...

3. यह देश सदा आज़ाद रहे
खुशहाल रहे आबाद रहे
हो मेरे तिरंगे का मान सदा
हो भारत का गुणगान सदा
बीते युग की परछाई तले, पलते नव युग की आन हैं हम ... .

******* 10 अगस्त 1986

गौरव हमारे देश का

गौरव हमारे देश का हम यूँ बड़ायेंगे
सुख के बनेंगे मेघ तो अम्बर पे छायेंगे

1. झौंका पवन का बनके झूमेंगे चमन-चमन
करके श्रृंगार हम, वसन्त के बनें सुमन
छा कर घटा के रूप में अमृत बहायेंगे
सुख के बनेंगे मेघ तो, अम्बर पे छायेंगे।

2. आँचल से पोंछ कर तेरा ये वक्ष हे धरा
आँचल लगायेंगे तेरे रज-कण वसुन्दरा
हम धूल की तरह तेरे अन्दर समायेंगे
सुख के बनेंगे मेघ तो, अम्बर पे छायेंगे।

3. ललकार हो समय की तो डट कर रहेंगे हम
मुस्काओं तुम सदा यूँ ही हँस कर सहेंगे हम
जो दूध से नाता है हम उसको निभायेंगे
सुख के बनेंगे मेघ तो, अम्बर पे छायेंगे।

4. अपना जन्म सफल हो वह दिन भी आयेगा
तेरा खून जब नसों में तूफाँ मचायेगा
हम सोयें कैसे हम तो जग को जगायेंगे
सुख के बनेंगे मेघ तो, अम्बर पे छायेंगे।

5. मंगल तेरा हो भारती, हो कुशल भारती
हम सब कहेंगे गर्व से, हम सब हैं भारती
हम आज यही आरती, सब मिलके गायेंगे
सुख के बनेंगे मेघ तो, अम्बर पे छायेंगे।

✸✳✸✳✸✳✸ 15 अक्तूबर 1993

गीत

घृणा की आँधियों में

घृणा की आँधियों में अब दीप यूँ जलाना
जो बुझे न युग-युगांतर देखे जिसे जमाना।

1. ना कोस भाग्य को अब तू कर्म कर किये जा
अपने लिये जिया है औरों के हित जिये जा
क्योंकि तुम्हें है गौरव इतिहास दोहराना
जो बुझे न ... .

2. तू अतीत देख अपना ज्योतित है और अमर है
अस्तित्व फिर तुम्हारा सहमा है क्यों यह डर है
तन-प्राण देके हमने सीखा है सर उठाना
जो बुझे न ... .

3. सेवा का भाव लेकर प्रेरित हो कर्म पथ पर
और बदल दे भाग्य सबका अपने ही बाहुबल पर
उन सहमी बस्तियों में विश्वास फिर जगाना
जो बुझे न ... .

✸✶✸✶✸✶✸

6 जनवरी 1995

जागे हिन्दुस्तान रे

जाग उठो और चलो निरंतर, फूटा नया विहान रे
स्वप्नों को साकार करो यों, जागे हिन्दुस्तान रे

1. यह धरती है माँ हमारी और हम इसके रक्षक है
प्राणों का बलिदान भी माँगे तो इसका पहला हक है
माँ की ममता के आगे तो झुका करे भगवान रे ... ...

2. इसी तिरंगे की छाया में चलो शुरू अभियान करें
तोड़ चलो वह हाथ जो इसका थोड़ा भी अपमान करें ... ...
अब न रूकें जो रोके कोई, जागा है स्वाभिमान रे ... ...

3. अब न लाज लुटे अबला की, अब न हो कोई बेघर
अब न रोयें मायें बेबस, अब न हो गैरों का डर
अब न कहीं हो जीवन पथ पर वीराने, शमशान रे ... ...

4. देश धर्म हो अपना और, देश की पहचान हो
देश ही परिचय, देश कर्म हो, देश अमर संतान हो
देश का जन–जन हो प्रसन्न हो देश का कल्याण रे ... ...

******** 30 सितम्बर 1991

माँ भारती

तेरी आरती, माँ भारती। हम वीर गायेंगे
तेरी भेंट में हम शीश भी अपने चढायेंगे।

1. तेरी आरती की थाली हो पूर्ण धरा - आकाश
जिसमें समाये पूर्ण मानव जाति का विश्वास
विश्वास जो टूटे नही, टूटे भले ही श्वास
ऐसी ही हम सद्भावना मन में जगायेंगे
तेरी आरती ... ...

2. हमजाति बन्धन तोड़कर यूँ एक हो जायें
ऊँचाइयों को छू सकें हम नभ भी छू जायें
हो दृढ़ हमारी शक्ति हम खुद शक्ति बन जायें
हर इक कदम हम मित्रता की ओर बढायेंगे
तेरी आरती ... .

3. इस देश के निर्माण में हम एक - झुट होकर
संग - संग चलेंगे मंजिलों की ओर यूँ मिलकर
बाधा मिटायेंगे हर इक हम दूर तक चलकर
अपने लिये हम रास्ते खुद ही बनायेंगे
तेरी आरती ... ...

4. अब तक मनाते आये कितने ही रक्षाबंधन
भाई - बहन के प्यार से उभरे तेरा अभिनन्दन
माथे तिलक लहू का करेंगे मानकर चन्दन
अबसे हर राखी माँ तेरे हेतु मनायेंगे
तेरी आरती ... ...

****

8 दिसम्बर 1995

नव निर्माण करें

आज चलो हम नई चेतना का आह्वान करें
और वसुन्दरा की सुन्दरता का नव निर्माण करें।

1. नभ के उर पर चलने दें
झोंके फिर मस्त पवन के जब
डैनों के थपेड़ों की गुँजन
फिर स्ते गूँजेगी गगन में तब
हम प्रकृति को वापस अपना वैभव प्रदान करें ... ...

2. यह धरा सौन्दर्य विहीन न हो
फूलों से और हरियाली से
अपना जो धन है हर वन में
वह वन न दिखें यूँ खाली से
इस देश की मिट्टी कनक है इसका हम सम्मान करें ... ...

3. मेरे देश की भूमि स्वर्णिम हो
और गगन हो आभा की सरिता
हर नदी हो गंगा की प्रतिभा
हो अड़िग हिमालय का पहरा

यह खेत हरे हों धान भरे, सबका कल्याण करें ... ...

4. वह लोग न जिनका कोई सहारा
और कोई संबल
जहाँ पेट की आग बुझाने को
होगा न तनिक भी जल

हम उनका सहारा बन पायें ऐसा भगवान करें ... ...

******* 16 फरवरी 1995

शत–शत प्रणाम हो

तेरी तरह जीवन मेरा भारत के नाम हो
तुझे राष्ट्रपिता मेरा शत-शत प्रणाम हो

1. इस भू की माटी का तिलक मैं नित किये रहूँ
तुझ जैसा सुत जो जन सकी उसको मैं क्या कहूँ
मुख पर रहा जिसके सदा ही राम-राम हो
तुझे राष्टपिता मेरा शत-शत प्रणाम हो।

2. संतों के संत देश भक्ति के उदाहरण
दलितों के मित्र, हे महापुरूष महान जन
श्रद्धा के फूल मेरे आज तेरे नाम हों
तुझे राष्ट्रपिता मेरा शत-शत प्रणाम हो।

3. सेवा के पथ पर हर नया युवक उभर रहा
जो देश दे चुके थे तुम उसको संवर रहा
तेरी प्रेरणा हो साथ देश का जो काम हो
तुझे राष्ट्रपिता मेरा शत-शत प्रणाम हो।

******* 1993

गंगा

तीव्र गति अविराम चले है, मधमाती मन भाती गंगा
भारत के इतिहास का गौरव, अपनी धुन में गाती गंगा

1. ऋषियों के तप की महिमा से इसकी लहर-लहर लहराये
नग उत्तुग हिमालय जैसा पद वन्दन में शीश झुकाये
देवों का आवास है इसमें यह है स्वयं भव भूति गंगा।

2. नीर के रूप में मधु अमृत जिस मिट्टी को सदा मिला है
उस मिट्टी का यौवन महका और आँचल भी सदा खिला है
धन्य है भारत जिसकी भूमि युग-युग से सरसाती गंगा ... ...

3. लघु आकार में चलकर गंगा शान्ति का संदेश सुनाये
सीमाओं के भीतर चलकर शिष्टाचार का बोध कराये
जीवन के उच्चतम आदर्शो की युग-युग से थाती गंगा ... ...

4. जिससे नव जीवन मिल जाये गंगा ऐसा नीर बहाये
जो भी शरण में इसके जाये शुभ्र-गौरवशाली कहलाये
तभी तो जग-जननी दुख हारिन, मधुमती कहलाती गंगा

*******   20 जुलाई 1994



(च) फिर महके काश्मीर कश्यप का

नन्हा कल्हण

तुम्हारे बंदूक की नोक जितना
मुझ नन्हे
कल्हण का सीना
झेल तो न सका
अठराह गोलियों का वार
और स्वर्णिम इतिहास के बदले
मैंने लिख डाला
अपने मासूम रक्त से
एक शरमनाक इतिहास–
तुम्हारी बुज़दिली का।

******* 15 फरवरी 1998

कल्हण :– कश्मीर के विश्वविख्यात इतिहासकार जिन्होंने 'राजतंरगनी' रची है।

शिव तेरी महिमा को गायें

शिव तेरी महिमा को गायें इतना बस अधिकार दो
बुद्धि, बल और ज्ञान, जन-कल्याण का हमें भार दो

1. फिर से बन जायें तपोवन इस धरा पर हर कहीं
और विनाशी काल से बच जाये कश्यप की मही
आज खोलो शिव झटा और गंग की इक धार दो
बुद्धि बल और ज्ञान, जन-कल्याण का हमें भार दो।

2. तुम हिमालय पर विराजो संग में शक्ति लिये
हे त्रिलोचन ज्ञान के हर पथ पे हों दीप्ति दिये
कमल-कर का छत्र और आशीष बारंबार दो
बुद्धि-बल और ज्ञान जन कल्याण का हमें भार दो।

3. फिर से कल्हण की कला का हर कलम में वास हो
फिर से श्रीभट्ट के गुणों का चेतना में वास हो

फिर से कश्यप रूप में हमें और इक अवतार दो
बुद्धि बल और ज्ञान–जन कल्याण का हमें भार दो।

4. हे प्रभु हम लक्ष्य साधे हैं मगर पथ भ्रष्ट से
आज दो वरदान ऐसा मुक्त हों हम कष्ट से
कर्मभूमि में खड़े हैं शक्ति अपरमपार दो
बुद्धि बल और ज्ञान, जन कल्याण का हमें भार दो।

******* 26 फरवरी 1995

श्रीभट्ट– कश्मीर के इतिहास में एक ऐसा व्यक्तित्व जिसने सर्वस्व त्याग कर कश्मीरी हिन्दु समाज के पुनर्उत्थान के लिए उस समय काम किया जब समाज पर अत्याचार हो रहा था।

नव भारत का निर्माण करो

इस शोक में आस की किरण कहाँ
जहाँ देखो हताश हैं लोग खड़े
इस भीड़ में कोई स्वर भी नही
अचरज में रहेंगें कब तक पड़े?

उस पार कोई ललकार रहा
इस पार के लोग निहार रहे
नेता भी हैं अपनी सुरक्षा में
इस द्वार कोई संहार करें।

तलवारों की झंकारो का
क्यों सामना करने कोई आगे बड़े
घर की धौलत का बटवारा
करने हेतु सब द्वार खड़े।

घर आँगन हैं शमशान बने
हर दिशा में काल की प्रतिमा सी
जहाँ बस्ती थी वीरान बने
इन्सान में अब वह प्रतिभा नही।

अब प्रकृति मौन मे डूबी हुई
और गगन भी चिंतित देख रहा

धरती की चुनरिया पर दाग दब्बे
और एक है तू जो देख रहा।

इतिहास उन्हे दोहरा ही गया
जो मिट भी गए पर हटे नही,
इतिहास हमारी करनी को
दोहराता रहेगा आगे भी।

आने वाली पीढ़ी हमको
कपूत कह, घृणा न करे
जो माँ की रखवाली के लिए
कुछ कर न सके, कुछ कह न सके।

सुन्दर स्वपनों का भारत
कब बनेगा? इसकी प्रतीक्षा कर
तुम सुप्त रहे स्वप्नों के लिए
अब स्वपनों को साकार भी कर।

उठो प्रातः की पहली किरण के संग
अपनी मंजिल आसान करो
मिलकर इक राह पर कदम बढ़ें
नव भारत का निर्माण करो।

******* 6 मार्च 1991

वे कौन थे

माँ की अँगुली पकड़कर
मैं चल पड़ा
एक दिन
एक घनी बस्ती की ओर ... ...
निहारता चला जा रहा था
सब कुछ
एक तीव्र उत्सुक्ता के साथ
क्योंकि ... ...
हर वस्तु अपरिचित
मैं रूक गया ... ...
विस्मित होकर
देखने लगा,
माँ समझ गई
मैं तो कुछ न बोला
माँ कहने लगी
बेटा! इन्हें भवन कहते हैं
ये हैं इनकी खिड़कियाँ
ये किवाड़, ऊपर छत
और आगे ... ...
लम्बे–चौड़े बरामदे,

इनके भीतर

रहते हैं लोग

मेरे पल्ले कुछ न पड़ा,

मैने पूछा, माँ!

ये बेचारे लोग

कैसे रहते होंगें

इन भवनों में?

माँ फीकी मुस्कान भरकर बोली

बेटा - घर तो

इन्ही को कहते हैं

मैं फिर मुँह फुलाकर

बैठ गया

और पूछा, माँ ... ...

जिसमें हम रहते हैं

वह क्या है?

माँ ने आह भरते हुऐ कहा

बेटा! वे तो टेंट हैं

उसमें शरणार्थी रहते हैं

मैने फिर पूछा, माँ।

शरणार्थी? तो क्या हम

अपने देश में नही रह रहें हैं?

नही बेटा

माँ बोली

हम अपने देश में

शरणार्थी हैं
इसी कारण
चुप हैं–जी रहे हैं
उन फटे चीथड़ों के भीतर
कड़ाके की ठण्ड़ हो
या झुलस्ती धूप
सड़–गल रहे हैं
भीतर ही भीतर
क्योंकि, हमारे घर
हमारा सब कुछ
ले गये 'वे'
सबके होते हुऐ
दिन दहाड़े
सबके सामने
ले गये 'वे' सब कुछ
माँ सिसकती हुई
आगे कुछ न बोल पाई
और मैने कहा
माँ! तुम रोना मत
मै पता लगा लूँगा
'वे' कौन थे

******* 19 जुलाई 1996

अबकी दीवाली

अबके दीप जलेंगे घर घर
तम की चादर मिट जायेगी
नई उमंगों में ढल-ढल कर
अबकी दीवाली आयेगी

विस्फोटों की धुँधलाहट में
कितनों ने कुलदीपक खोये
कुछ कौशल्यायें तो अब भी
राम की राह तकें और रोयें
अबके हर दशरत हँस देगा
कौशल्यायें मुस्कायेंगी
नई उमंगों में ढल-ढल कर
अबकी दीवाली आयेगी

बन जायेगी धरा अयोध्या
सहमें भाव न रह जायेंगे
जब रावण पर विजयी बनकर
रामचन्द्र जी घर आयेंगे
भारत की मातायें फिर से
लव-कुश को जन पायेंगी

नई उमंगों में ढल-ढलकर
अबकी दीवाली आयेगी

अबके दीप में प्रेम की बाती
शाँन्ति के घी से दीप्ति होगी
और अमर ज्योति की काँति
नित नव रूप में शोभित होगी
भारत की इस धन्य धरा को
युग-युग तक जो चमकायेगी
नई उमंगों में ढल-ढलकर
अबकी दीवाली आयेगी

घृणा की अब आग बुझायें
नव-निर्माणो में जुट जायें
अपनी रीत तो प्रीत रही है
और श्रीराम की मर्यादायें
इसी पर्व पर आदर्शो की
वही प्रथा फिर लौट आयेगी
नई उमंगों में ढल-ढलकर
अबकी दीवाली आयेगी

✸✳✸✳✸✳✸ 6 अक्तूबर 1996

आतंक की अग्नि में

अब तो इस आंतक की अग्नि में न झुलसेंगें हम
ठान ली है हमने, अपनी नीति को बदलेंगे हम।

1. बिके शव इक लाख में हम इससे तो सहमत नहीं
मौत के बाजार में अब न कभी बिकेंगे हम।

2. आज कपड़े का यह घर अपना बना आवास है
अपने खोये घर को फिर कल ढूँढ कर दम लेंगे हम।

3. जी सके हर इक यह जीवन शान से, सम्मान से
दानवों की जाति को, पैरों तले कुचलेंगे हम।

4. श्वास है जब तक तेरे हेतु जियेंगे आन से
भव्य पीढ़ी को दिशायें नव्य दिखलायेंगे हम।

5. उस सडायँध रक्त की अब बास तक न आयेगी
ओ कश्यप!कश्मीर तेरा फिर से महकायेंगे हम।

✸✳✸✳✸✳✸ 4 मई 1995

संभल के पैर धरो धरती पर

देखकर चलने के आदी बन जाओ
कुछ सुनकर चलने के आदी
वातावरण में गूँजेंगे कभी स्वर
कोमल स्वर नही ... ...
केवल चीत्कारें
हाय! बचाओ-बचाओ
ये स्वर देश के लाड़लों के स्वर हैं।
किसी की राखी
किसी का सुहाग और
किसी के कुल का दीपक
केवल न्याय माँग रहे हैं तुमसे
इसी कारण
सुनकर चलने के आदी बन जाओ
... ...

कभी बहा था लहू
देश प्रेमियों का धरती पर
आज भी भरी है धरती
निर्दोषों के लहू से
कोमल फूलों से

दोषी यह नही, बस भुगत रहे हैं।
दोषी तो सानन्द जीवन
किसी के इशारों पर
बिता रहे हैं,
छिप – छिपकर
धरती माँ की कोख से जन्में
उसी के वक्ष पर
बेसुध होकर
सो रहें हैं कयोंकि ... ...
इन्हें सुलाया गया है
इसी कारण – जागने वालो
जगाओ सबको
और – कह दो सबसे,
संभल के पैर धरो धरती पर
धरती भारी है।

✹✳✹✳✹✳✹ 2 दिसम्बर 1990

लौट के जायेंगे

हम विजय पताका फैहराकर, इतिहास नया बनायेंगे
`कश्मीर की माटी की सौगन्ध, कश्मीर लौट कर जायेंगे

1. जिस से है जुड़ा सर्वस्व मेरा
उस धरा को कैसे भूलूँ भला,
जिसकी मिट्टी अस्तित्व मेरा
जिसमे है मेरा अतीत पला
वो जन्मभूमि है पूण्यभूमि भी उसे बनायेंगे ... ...

2. जो स्वर्ग स्पष्ट है धरती पर
जो ऋषियों-मुनियों का है घर,
जिसे देवों का वरदान मिला
जिसे पूजते आये हैं सब नर
उस तपोभूमि को रणभूमि बनने से बचायेंगे ... ...

3. कश्मीर की भूमि जननी की
भाँति है पुकारे हम सबको,
हम भी न सरकने देंगे कभी
तेरी दूब की हरी चुनरिया को
तेरी कोरव में पनपे हैं तेरे आँचल में समायेंगे ... ...

4. तेरे आँचल की उस गन्ध से हम
कितना ही क्यों न दूर कहीं,
पर लाज न तेरी बचा पायें
इतने भी हम निंलज तो नही
संतान का कर्त्तव्य, कर्त्तव्य की भाँति ही निभायेंगे ... ...

✸✳✸✳✸✳✸ 28 सितम्बर 1994

इस युग का इतिहास

इतिहास हमें इस युग का तो
लहू से ही लिखना होगा ना?
जो बात स्याही कह न सकी
उसे लहू से ही लिखना होगा।

यह लहू तो गमक उठेगा ही
इतिहास के पन्नों पर फिर भी
जिसे सरिता का न रूप मिला
जिसे देख यह अम्बर भी न हिला

मानवता के इस युद्ध में यूँ
दोनो ही तरफ है मानवता
यदि जीत भी जाये तो मानवता
यदि हार भी जाये तो मानवता।

यह आदर्शो का बँटवारा

यह जाति–धर्म का बँटवारा

ईश्वर और खुदा के बीच का युद्ध

मानव की मति का बँटवारा

वह चीख जो दबकर भूमि तले

रह गई है कुछ कहते–कहते

जीने भी न देगी अब हमको

मरनें भी न देगी अब हमको।

ऐ मेरी कलम। तुम चुप न रहो

मेरी कला का न समर्पण हो

तुम बीते युग का साया हो

और आते युग का दर्पण हो।

✸✳✸✳✸✳✸ 24 अप्रैल 1995

कल विजय पताका होगा वहाँ

कल विजय पताका होगा वहाँ, जहाँ अब शत्रु का ढेरा है
क्योंकि इस माटी का कण-कण, बस मेरा है, बस मेरा है

1. अब कोई लुटेरा आगे बढ़े
हम सामना करने को हैं खड़े
जहाँ कल तक अँधियारा था घना, वहाँ आज नया सवेरा है
क्योंकि इस माटी का कण-कण, बस मेरा है, बस मेरा है।

2. नही अब वह यहाँ टिक पायेगा
जो खून से प्यास बुझायेगा
भारत की हर-इक बस्ती में, हम वीरों का बसेरा है
क्योंकि इस माटी का कण-कण, बस मेरा है, बस मेरा है,
वह खून मेरी परिभाषा है
जीने की बस इक आशा है
जो तेरे लाल बहाके गये, उसका अब कर्ज़ तो मेरा है
क्योंकि इस माटी का कण-कण, बस मेरा है, बस मेरा है।

4. अब शुरू हुआ अभियान नया
हर युवक का हो बलिदान नया
माओं के लाल समर्पित, हर उस पथ पर जो पथ तेरा है
क्योंकि इस माटी का कण-कण बस मेरा है, बस मेरा हैं।

******* 7 अक्तूबर 1991

यह कोई बलिदान नहीं है

लहू से भीगी कोख हो माँ की
माँग किसी की शांत-धवल हो
किसी बहन से छिन्न जाये राखी
कोई अनाथ हो या निसंबल हो।
सिसकी हो झरनों के स्वर में
धरती का परिधान मलिन हो
भय की प्रतिछाया हो घर में
जीने की इच्छा कुंठित हो।
हिंसा की चिंगारी जो भड़की
राख के ढेर बिखर जायेंगे
कोई न होगा जो अश्रु बहाये
न आयेगी भोर, न खग गायेंगें।
बहुत न हो अब भार शवों का
लाल न हो नदियों का पानी
हर पथ पर शमशान न हों अब
बहुत हुआ मानव अभिमानी।
ऋण चुकाना होगा हमको
भारत की पावन भूमि का
रक्षा में यदि जान भी जाये
दुख का मगर आभास न होगा।
निर्दोषों के लहू से धोये
हाथों में कोई आन नही है
इस लहू से वसुधा हो कलंकित
यह कोई बलिदान नही है।

✸✳✸✳✸✳✸

4 मई 1992

फिर से स्वर्ग बनायें

झुड़े हैं जिससे सपने अपने, झुड़ी हैं अभिलाषायें
चलो उसी कश्मीरं को अपने, फिर से स्वर्ग बनायें

1. वह कश्मीर जहाँ कल तक तो हरियाली मधमाती थी
अबके उस कश्मीर को देखो प्रकृति अकुलाती सी
सींचें अपने लहू से यूँ फिर खेतिहर लहरायें ... ...

2. राख के वह ढेर जहाँ पर, कल तक अपनी बस्ती थी
अपना भी जीवन था कोई, अपनी कोई हस्ती थी
फिर से उस निर्जन में चलो हम अपने महल बनायें ... ...

3. छोड़ चले हैं ऐसी धरा को जिससे कोई अनजान नहीं
आगे पथ पर मोड़ हैं ऐसे जिनकी कोई पहचान नहीं
गौरवमय गरिमा कश्मीर की, फिर से हम लौटायें ... ...

4. हम लुटेरों के आगे तो न्याय की भीख न माँगेंगे
अपने अधिकारों के लिये हम एक होकर जागेंगे
सरबस जिसकी भेंट चढ़ा है अग्नि वह बुझायें ... ...

5. खोये हैं घर, खोई डगर, खोया सर्वस्व हमारा है
वह कश्मीर जो कल अपना था वह आज भी हमारा है
भारत का वह शीश है, उसके नमन में शीश झुकायें ... ...

******* 29 जनवरी 1992

वही पराजित पीढ़ी का

मैं पराजित पीढ़ी का हूँ ही नहीं
क्यों मैं अपनी हार यूँ ही मान लूँ।

1. जिस डगर को छोड हम संग हैं चले
उस डगर को कोई भूले ही भले
राह दूबर थी संभल कर हम चले
उस सफर से मैं कहाँ अनजान हूँ

2. हमने देखी है लुटती बस्तियाँ
हमने देखी है बिखरती अस्तियाँ
सस्ती मौतें मर गई जो हस्तियाँ
उनकी यादों का प्रखर मैं बाण हूँ।

3. झाँककर पूर्वजों के इतिहास में
जब भी देखा तब हुआ आभास यह
हार उनके पास फटकी तक नहीं
जिनका वंशज, जिनका मैं संतान हूँ

4. है लहू से अब सनी धरती जहाँ
हैं बने सुनसान और निर्जन जहाँ
मैं बसाऊँगा घनी बस्ती वहाँ
क्योंकि मैं जीवन का इक आह्वान हूँ।

******* 22 मई 1992

आहवान गीत

आज फिर हैं द्रौपदी ने केश खोले प्रण किया
आज फिर हैं कौरवों ने पाण्ड़वों से रण किया
वीर तुमको द्रौपदी ने आज है स्मरण किया
लाज पर है आँच आई और आवाहन किया।

इक तरफ निर्बल दबी विधवाओं की आवाज़ है
इक तरफ माँ की लुटी सी गोद का भी राज़ है,
इक तरफ अनाथ चुप हैं हमसे वे नाराज़ हैं
इक तरफ बहनों का अपने भाइयों पर नाज़ है।

या प्रतापी पूर्वजों पर गर्व करना छोड़ दो
या इसी से अपने साहस का किस्सा जोड़ दो,
अपने घर को जीतना है जिसको खो चुके हैं हम
अब बड़ाओ हाथ अपना बहुत रो चुके हैं हम।

हे वीर जन! तुम नग्न होती लाज देख पाओगे?
भारत का शीश कट रहा क्या देखते ही जाओगे?
जन–जन की दृष्टि तुम पर है, तुम आज क्यों खामोश हो?
कश्मीर की मिट्टी का तुमसे प्रकट फिर न रोष हो।

अब फैसले का पल है यह रणभूमि में रणवीर हैं
और हाथ में तेरे, सैंकड़ों की तकदीर है,
विश्वास है कि पाण्डवों की कौरवों पर जीत है
क्या कृष्ण बन सकोगे तुम? अपनी तो यह रीत है।

लो हाथ में कमान और यह धर्मयुद्ध अभी लड़ो
जो हाथ साथ माँगते हैं उनकी ओर तुम बड़ो,
यह सत्य है यह भूमि है बलिदान और शान की
इस बात पर है गर्व हमने की है रक्षा आन की।

8 दिसम्बर 1995

अबकी ऐसी होली आये

जग के सुप्त जनों को जगाये
मानवता और प्रीत उगाये
आदर्शों की रीत निभाये
अबकी ऐसी होली आये

जो आतंक की भीड़ में खोये
जिनकी प्रतीक्षा में माँ रोये
वह आर्दश का पथ अपनाये
अबकी ऐसी होली आये

खून बहे तो देश के हेतु
दृढ़ हो देश भक्ति का सेतु
व्यर्थ न अब कोई खून बहाये
अबकी ऐसी होली आये

वन हरे और खेत भरे हों
कूप, नदी और ताल भरे हों
नभ अमृत सा नीर बहाये
अबकी ऐसी होली आये

सावन के झूले पर झूलें
हर बाला खुशियों से फूले
कोयल अम्बवा की डाल पर गाये
अबकी ऐसी होली आये

होली खेलें और खिलायें
रंगों का यूँ चयन करायें
तीन रंग में सब रंग जायें
अबकी ऐसी होली आये

******** 24 मार्च 1994

चिनार के आँसू

(1)

एक समय था
जब मुझे गर्व था
अपने होने का
इस धरती पर
क्योंकि-कई पथिक
दिनभर की थकान के बाद
मेरी छाँव में बैठकर
राहत की साँस लेते थे,
और एक समय है
जब मैं लज्जित खड़ा हूँ
केवल खड़ा,
वह भी इसलिए कि
चाहते हुऐ भी
मैं उखड़कर
नही गिर रहा।

(2)

रात का सन्नाटा हो
या-दोपहर की हलचल
मैं निरन्तर
देख रहा हूँ-

हत्यायें – अपने चारों ओर
और सहमकर रह गया हूँ
थक गया हूँ मैं
दुखी हूँ
मासूम हत्यायें देखकर।
पत्तों की सरसराहट
दब गई है
बंदूकों की आवाज़ों तले
और मैं
बेजान खड़ा हूँ
केवल खड़ा।

(3)

त्रस्त वातावरण और
भयंकर सन्नाटा
पहचानते हुऐ भी
न पहचानने का नाटक
सूनी गलियों में
गरजता ड़र
और मैं मौन खड़ा
कई वर्षो से
आँसू बहाता
भीतर से शुष्क हुआ
काट रहा हूँ
एक लम्बा पतझड़
और सोच रहा हूँ
कि मैं अब तक
क्यों खड़ा हूँ?

✸✳✸✳✸✳✸ 2 फरवरी – 1998



सुनीता रैणा

लेखिका परिचय

नाम	-	सुनीता रैणा
जन्म तिथि	-	15 अप्रैल 1967
जन्म स्थान	-	द्यालगाम (अनन्तनाग कश्मीर)
शिक्षा	-	बी. ए.
		पी. जी. डिप. एजुकेशन/टीचिंग
		एजुकेशनल मैनेजमेंट, प्लैनिंग, एडमिनिस्ट्रेशन।
निवास	-	सूर्य विहार गली नं0 5 बोडी (तालाब तिल्लो) जम्मू 180002
दूरभाष	-	552821
गतिविधियाँ	-	कई साहित्यिक संस्थाओं से जुडी तथा भारतीय भाषा परिषद् द्वारा प्रकाशित पुस्तक (बाल गीत) 'शुर्य लय' में योगदान। विभिन्न पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित।
लेखन क्षेत्र	-	कश्मीरी तथा हिन्दी।